Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में भारत के कदम: एक नए बाजार की तलाश

जगदीश राय शोधार्थी (वाणिज्य), श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनूँ, राजस्थान.

ABSTRACT:

भारत ने अपनी वैश्विक आर्थिक स्थिति को मजबूत करते हुए ग्लोबल साउथ में नए बाज़ारों की खोज के लिए अनेक पहल की हैं। इस क्षेत्र में नए भारत की रणनीतियाँ आर्थिक झेदारी, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति और नेतृत्व की भूमिका को प्रमुखता से शामिल करती हैं।

आर्थिक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारत ने मुक्त व्यापार समझौतों और निवेश में वृद्धि की है। तकनीकी क्षेत्र में, भारत ने डिजिटल अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य देशों के साथ साझेदारी की है, जिससे ई-कॉमर्स, फिनटेक और आईटी सेवाओं में सहयोग बढ़ा है।

भारत की नीति सतत विकास पर आधारित है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, हरित ऊर्जा और सामाजिक आर्थिक विकास पर जोर दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, भारत ने ग्लोबल साउथ में अपने नेतृत्व को स्थापित किया है, जिसका प्रभाव आर्थिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की नीतियों में भी दिखाई देता है। भारत, विकासशील देशों के साथ मिलकर एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

इस प्रकार, भारत न केवल नए बाजारों की तलाश कर रहा है, बल्कि विकासशील देशों के साथ मिलकर एक सतत और समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम उठा रहा है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, सतत विकास लक्ष्य, मुक्त व्यापार समझौता, फिनटेक, हरित ऊर्जा।

परिचय:

भारत, एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में, वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर रहा है। ग्लोबल साउथ में नए बाजारों की खोज और आर्थिक साझेदारियों को मजबूत करने की दिशा में भारत ने अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस पत्र में, हम ग्लोबल साउथ में भारत की नीतियों और रणनीतियों का विश्लेषण करेंगे, जिसमें आर्थिक साझेदारी, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, सतत विकास लक्ष्य और नेतृत्व की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ का परिचय:

ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ अंतरराष्ट्रीय आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से विभिन्न क्षेत्रों को संदर्भित करते हैं।

ग्लोबल साउथ: इसमें ज्यादातर विकासशील देश शामिल हैं जो एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्रों में स्थित हैं। ये देश अक्सर निम्न या मध्यम आय वाले होते हैं और औद्योगीकरण की प्रक्रिया में होते हैं। ग्लोबल साउथ की यह परिभाषा आर्थिक विकास की दृष्टि से नए बाजारों की खोज और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

ग्लोबल नॉर्थ: इसमें अधिकांश विकसित देश शामिल हैं जो उत्तरी अमेरिका, यूरोप, और कुछ एशियाई देशों जैसे जापान और दक्षिण कोरिया में स्थित हैं। ये देश उच्च आय वाले और अत्यधिक औद्योगीकृत होते हैं। ग्लोबल नॉर्थ के देश आर्थिक दृष्टि से स्थिर और सुसंगत होते हैं और अक्सर तकनीकी उन्नति में अग्रणी होते हैं।

आर्थिक साझेदारी:

भारत ने अपने व्यापारिक साझेदारों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। मुक्त व्यापार समझौतों और निवेश में वृद्धि की गई है, जिससे व्यापार और निवेश के अवसरों में विस्तार हुआ है। उदाहरण स्वरूप, भारत ने अफ्रीका महाद्वीप के साथ व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ किया है, जहां वार्षिक व्यापार की मात्रा लगभग $100 बिलियन तक पहुँच चुकी है। भारत-अफ्रीका व्यापार के लिए अफ्रीकी महाद्वीपीय व्यापार क्षेत्र (AfCFTA) एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है, जिससे भारतीय निर्माताओं को एक एकल बाजार का लाभ उठाने में आसानी होती है। अफ्रीकी महाद्वीपीय व्यापार क्षेत्र के माध्यम से, भारत ने विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश किया है, जैसे कि कृषि, ऊर्जा, और विनिर्माण क्षेत्र।

डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास:

भारत ने तकनीकी क्षेत्र में डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए अन्य देशों के साथ साझेदारी की है। असोसिएशन ऑफ साउथ-ईस्ट एशियन नेशंस (ASEAN)-इंडिया फ्री ट्रेड एरिया के तहत, भारत-ASEAN व्यापार लगभग $81.3 बिलियन तक बढ़ गया है। यह क्षेत्र लगभग 1.9 बिलियन लोगों और $5.36 ट्रिलियन की संयुक्त GDP के साथ एक बड़ा व्यापार क्षेत्र बनाता है, जिससे ई-कॉमर्स, फिनटेक और आईटी सेवाओं में सहयोग बढ़ा है। डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के माध्यम से, भारत ने इंटरनेट कनेक्टिविटी, साइबर सुरक्षा, और ई-गवर्नेंस जैसी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी प्रगति की है। इसके अलावा, डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से, भारत ने अपने डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया है और वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाया है।

सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति:

भारत की नीति सतत विकास पर केंद्रित है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, हरित ऊर्जा और सामाजिक आर्थिक विकास पर जोर दिया गया है। भारत ने विकासशील देशों के साथ मिलकर काम करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं, जिससे सतत और टिकाऊ विकास सुनिश्चित हो सके। इसके माध्यम से, भारत ने ग्लोबल साउथ में अपने नेतृत्व को मजबूत किया है और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

नेतृत्व की भूमिका:

भारत ग्लोबल साउथ में एक महत्वपूर्ण लीडर के रूप में उभरा है। इसकी नेतृत्व क्षमता न केवल आर्थिक और तकनीकी विकास में दिखाई देती है, बल्कि इसके सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की नीतियों में भी परिलक्षित होती है। भारत ने विकासशील देशों के साथ मिलकर एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारत के नेतृत्व के तहत, 2023 में अफ्रीकी संघ (AU) को G20 का स्थायी सदस्य बनाया गया। यह

ऐतिहासिक समावेश नई दिल्ली में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन में घोषित किया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सदस्यता को G20 की प्रभावशीलता को बढ़ाने और ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने के महत्वपूर्ण कदम के रूप में प्रस्तुत किया। इस कदम का G20 सदस्य देशों द्वारा व्यापक समर्थन किया गया और इसे बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा के रूप में देखा गया।

ग्लोबल साउथ व भारत के व्यापारिक संबंध:

1. **अफ्रीका के साथ व्यापारिक संबंध:** भारत ने अफ्रीका महाद्वीप में अपने व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ किया है, जहां वार्षिक व्यापार की मात्रा लगभग $100 बिलियन तक पहुँच चुकी है। भारत-अफ्रीका व्यापार के लिए अफ्रीकी महाद्वीपीय व्यापार क्षेत्र (AfCFTA) एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है, जिससे भारतीय निर्माताओं को एक एकल बाजार का लाभ उठाने में आसानी होती है। इसके अतिरिक्त, भारत ने अफ्रीका में विभिन्न क्षेत्रों में निवेश किया है, जैसे कि कृषि, ऊर्जा, और विनिर्माण क्षेत्र। भारत-अफ्रीका संबंधों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में भी सहयोग बढ़ा है, जिससे इन देशों में सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिला है।भारत का अफ्रीकी देशों के साथ तेल व्यापार में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत नाइजीरिया, अंगोला, अल्जीरिया, और इक्वेटोरियल गिनी जैसे देशों से कच्चे तेल का प्रमुख आयातक है। नाइजीरिया, जो अफ्रीका का सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है, भारत के लिए एक महत्वपूर्ण तेल स्रोत है। अंगोला भी भारत को कच्चे तेल की आपूर्ति में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके अलावा, भारत ने अल्जीरिया और इक्वेटोरियल गिनी के साथ भी तेल व्यापारिक संबंधों को मजबूत किया है, जिससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बल मिला है।
2. **ASEAN के साथ व्यापारिक संबंध:** असोसिएशन ऑफ साउथ-ईस्ट एशियन नेशंस (ASEAN)-इंडिया फ्री ट्रेड एरिया के तहत, भारत-ASEAN व्यापार लगभग $81.3 बिलियन तक बढ़ गया है। यह क्षेत्र लगभग 1.9 बिलियन लोगों और $5.36 ट्रिलियन की संयुक्त GDP के साथ एक बड़ा व्यापार क्षेत्र बनाता है, जिससे ई-कॉमर्स, फिनटेक और आईटी सेवाओं में सहयोग बढ़ा है। भारत और ASEAN देशों के बीच व्यापारिक सहयोग ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, जैसे कि रक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, और शिक्षा।
3. **मध्य पूर्व के साथ व्यापार और निवेश:** भारत और मध्य पूर्व के बीच व्यापारिक संबंध लंबे समय से मजबूत रहे हैं। 2023 में घोषित इंडिया-मिडल ईस्ट-यूरोप कॉरिडोर (IMEC) के माध्यम से, यात्रा समय और लागत में महत्वपूर्ण कमी आई है। संयुक्त अरब अमीरात (UAE) भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है, और 2022-23 में द्विपक्षीय व्यापार $84.84 बिलियन तक पहुँच गया था। तेल व्यापार के अलावा, गैर-तेल व्यापार में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

   मध्य पूर्व से भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) के महत्वपूर्ण स्रोत रहे हैं। UAE ने भारत के बुनियादी ढांचे क्षेत्र में $75 बिलियन के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है। प्रमुख निवेश ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स, और बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में साझेदारियों को शामिल करते हैं। सऊदी अरब की विज़न 2030 योजना ने भी ऊर्जा, कृषि, और खनन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित किया है।
4. **दक्षिण अमेरिकी देशों के साथ व्यापार:** भारत का दक्षिण अमेरिकी देशों के साथ व्यापारिक संबंध भी तेजी से बढ़ रहा है। 2022 में, भारत और लैटिन अमेरिका एवं कैरिबियन (LAC) क्षेत्र के बीच व्यापार लगभग $49 बिलियन था। प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में ब्राजील, कोलम्बिया और अर्जेंटीना शामिल हैं। भारतीय कंपनियों ने एलएसी क्षेत्र में तेल और गैस क्षेत्रों में निवेश किया है और महत्वपूर्ण संसाधनों जैसे तांबा और लिथियम में भी रुचि दिखाई है। भारत और दक्षिण अमेरिकी देशों के बीच सांस्कृतिक और कूटनीतिक संबंध भी मजबूत हो रहे हैं, जिससे दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापार और निवेश के अवसरों में वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष:

भारत ने ग्लोबल साउथ में नए बाजारों की खोज और आर्थिक साझेदारियों को सुदृढ़ करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण पहल की हैं। आर्थिक साझेदारी, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति और नेतृत्व की भूमिका के माध्यम से, भारत ने ग्लोबल साउथ में अपनी स्थिति को मजबूत किया है। अफ्रीका, ASEAN और दक्षिण अमेरिकी देशों के साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा देने के माध्यम से, भारत ने एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस प्रकार, भारत ग्लोबल साउथ में न केवल नए बाजारों की तलाश कर रहा है, बल्कि विकासशील देशों के साथ मिलकर एक सतत और समृद्ध भविष्य की दिशा में अग्रसर है।

REFERENCES

1. Economic Times. (2023): https://economictimes.indiatimes.com/
2. ASEAN Briefing. (2022): https://www.aseanbriefing.com/
3. UNDP India. (2023): https://www.in.undp.org/
4. Ministry of Commerce & Industry, India: https://commerce.gov.in/
5. **"India's G20 Presidency as a Voice of Global South"** by Sushil Kumar, *RIS Discussion Paper Series*, February 2024: https://ris.org.in/sites/default/files/Publication/DP%20291%20Sushil%20Kumar.pdf
6. **"India's Role in the Global South: Analyzing Its Strategic Balancing with China"** by Gauri Sareen, *IJNRD*, 2024: https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2403676.pdf